IJFANS INTERNATIONAL JOURNAL OF FOOD AND NUTRITIONAL SCIENCES
ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, Journal UGC CARE Listed (Group-I) Volume 10 ,SP Issu 01 2021

''वैदिक शिक्षा कार्य प्रणाली की वर्तमान कालखंड में उपादेयता''

शोधार्थी
आलोक कुमार शर्मा
महाराज विनायक ग्लोबल विश्वविद्यालय
ढ़ण्ड़, तह.–आमेर, जयपुर (राजस्थान)

शोध पर्यवेक्षक
डॉ. सुश्री मनोजलता सिंह
एसोसिएट प्रोफेसर
महाराज विनायक ग्लोबल विश्वविद्यालय
ढ़ण्ड़, तह.–आमेर, जयपुर (राजस्थान)

प्रस्तावना

किसी भी राष्ट्र को विकास के पथ पर अग्रसर करने में शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान होता है, शिक्षा एक ऐसा साधन है जिसके बल पर व्यक्ति, समाज और राष्ट्र को उन्नतशील बनाया जा सकता है। मनुष्य की पूरी सभ्यता एवं संस्कृति का विकास सामाजिक प्रक्रिया का ही परिणाम है। शिक्षा समाज की आकांक्षाओं के अनुरूप होती हैं, इसके द्वारा समाज के भूत का ज्ञान वर्तमान की आकांक्षाओं की पूर्ति और भविष्य का निर्माण किया जाता है।प्राचीन भारत की शिक्षा व्यवस्था कई मायनों में विशेष थी। प्राचीन भारतीय मनीषियों ने अपने ज्ञान एवं विद्वता के साथ मानवता के विकास एवं ज्ञान के प्रचार–प्रसार के लिए धर्म को केन्द्र बनाकर एवं धर्म द्वारा नियन्त्रित जिस शिक्षण पद्धति की शुरूआत पूर्व वैदिक काल में की, वह निश्चित रूप से श्रेष्ठ थी। उसकी श्रेष्ठता का ही परिणाम था कि भारत ने तत्कालीन समय में मानव सभ्यता, संस्कृति, विकास, ज्ञान, विज्ञान आदि के क्षेत्र में विश्वगुरू का स्थान प्राप्त किया। वैदिक काल में उच्च आदर्शों की प्राप्ति हेतु जिन शिक्षण संस्थाओं में बालक अध्ययन करता था, उन्हें गुरूकुल कहते थे।वर्तमान शिक्षण पद्धति में शैक्षिक संस्थाओं में सुव्यवस्थित एवं मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों के आधार पर शिक्षा व्यवस्था को संचालित किया जा रहा है, फिर भी शिक्षा अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने में असमर्थ है। आज के छात्र अनुशासन हीन हो गये हैं। नैतिकता देखने को नहीं मिलती। उनका चारित्रिक पतन हो चुका है।आज शिक्षा का व्यवसायिकरण होने लगा है। बालक और समाज आज किस राह पर आगे बढ़ रहे हैं इससे किसी का कोई सरोकार नहीं है, शोधकर्ता यही संपुष्टि करना चाहता है, कि क्या आज की कतिपय शैक्षिक समस्याओं का समाधान तद्युगीन शैक्षिक प्रणाली से इन प्रश्नों के समाधान से खोजना सम्भव है?

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, Journal UGC CARE Listed (Group-I) Volume 10 ,SP Issu 01 2021

अध्ययन का औचित्य

आज शिक्षा का उद्देश्य मानव का सर्वांगीण विकास कर समाज, राष्ट्र एवं विश्व की प्रगति में सहायक कुशल नागरिक बनाना है। जनतन्त्रीय शिक्षा व्यवस्था द्वारा व्यक्ति के व्यक्तित्व का शिक्षण विधियों के द्वारा सही अर्थों में निर्माण होता है। विकास, अवसर की समानता तथा स्वतन्त्रता एवं बन्धुत्व की उदात्त भावनाओं की स्थापना का उद्देश्य स्वीकार कर चुके हैं, किन्तु सर्वत्र भावात्मक एकता में बाधक तत्व वर्ग–भेद, धार्मिक असहिष्णुता जातिवाद, सम्प्रदायवाद, आर्थिक शोषण इत्यादि इस आदर्श की प्रगति में बाधक हो रहे हैं तथा लोगों को निराश कर रहे हैं, शिक्षण प्रक्रिया की समस्याएँ और भी असाध्य दिखाई पड़ रही है। अनिवार्य शिक्षा के नारे बुलन्द किये जा रहे हैं, किन्तु समुचित योजना, कुशल मार्गदर्शन तथा सफल साधन के अभाव में कोई भी प्रगति दिखाई नहीं पड़ रही है, बल्कि गुणात्मक सफलता उतनी ही दूर भागती जा रही है, आज शिक्षण विधियां एवं शिक्षण संस्थाएं उतनी गुणवत्तापूर्ण नहीं हैं जितनी पहले थी। आज की इन शिक्षण संस्थाओं एवं शिक्षण विधियों की सबसे बड़ी कमी यह है कि वह आज बालक के व्यक्तित्व का सम्पूर्ण विकास करने में असमर्थ सी प्रतीत होती है, आज का शिक्षा प्राप्त किया हुआ युवक भी दिशाहीन है, वह स्वयं अपने लिए सही निर्णय लेने में असमर्थ है वह आज के इस भौतिकतावादी संसार में अपना जीवन सुखपूर्वक व्यतीत करने में पूर्ण रूप से सक्षम नहीं है। वह आज इस संसार के लौकिक उद्देश्यों को प्राप्त कर नहीं पा रहा है तो पारलौकिक उद्देश्यों को प्राप्त करने की बात तो बहुत दूर की है।

आज के युवक में आत्मनियंत्रण, आत्म संयम और आत्मविश्वास की बहुत अधिक कमी है, उसमें निर्णय लेने की योग्यता भी नहीं है उस पर दबाव चाहे किसी भी परिस्थिति का हो लेकिन आज उसका जीवन स्थिर नहीं है।

अध्ययन के उद्देश्य

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, Journal UGC CARE Listed (Group-I) Volume 10 ,SP Issu 01 2021

1. प्राचीन भारतीय शैक्षिक वैदिक– पौराणिक शिक्षण संस्थाएॅ का अध्ययन करना है।
2. वैदिक–पौराणिक शिक्षा के विषयो का अध्ययन करना है।
3. भारत की प्राचीन शिक्षा का आधुनिक शिक्षा पर प्रभाव का अध्ययन करना है।
4. प्राचीन भारतीय शिक्षा की वर्तमान शिक्षा प्रणाली में उपादेयता का अध्ययन करना है।
5. प्राचीन भारतीय शिक्षा का तत्कालीन समाज पर प्रभाव का अध्ययन करना है।

शोध पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन में ऐतिहासिक तथा दार्शिनिक विधि का प्रयोग किया जायेगा

जनसंख्या

समृद्ध, विस्तृत एवं बहुविषयक साहित्यिक ग्रन्थ राशि में से वैदिक साहित्य उपलब्ध समस्त ग्रन्थ प्रस्तुत शोध की जनसंख्या हैं।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध में जनसंख्या के पूर्ण विस्तार के साथ कार्य करना सम्भव नहीं होने एवं शोध के उद्‌देश्यानुसार वाँछित भी नहीं होने के कारण वैदिक साहित्य से सम्बन्धित समस्त ग्रन्थों में से वैद, उपनिषद्, वेदांग का न्यादर्श की सौद्‌देश्य विधि द्वारा न्यादर्श के रूप में चयन किया गया।

अध्ययन की परिसीमाऐं

1. इस शोध का प्रबंध में वैदिक शैक्षिक दर्शनों की शिक्षण विधियों की चर्चा की गयी है।
2. वैदिक शिक्षण संस्थाओं की क्रिया विधियों की चर्चा की गयी है।
3. शोध प्रबंध में प्राचीन भारतीय शिक्षण पद्धति की वर्तमान भारत की शिक्षा पद्धति में उपादेयता की चर्चा की गयी है।

निष्कर्ष एवं सुझाव

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, Journal UGC CARE Listed (Group-I) Volume 10 ,SP Issu 01 2021

1 शिक्षा व्यवस्था में सुधार के लिए सुझाव

वैदिक–पौराणिक शिक्षा तथा आधुनिक शिक्षा व्यवस्था के तुलनात्मक निष्कर्ष पर दृष्टिपात करने से स्पष्ट होता है कि, आज की शिक्षा व्यवस्था ऋषियों की परम्परा में विकसित हुई शिक्षा व्यवस्था के सम्मुख नितान्त प्रभावहीन एवं समाज के लिए अत्यन्त अनुपयोगी है। इस शिक्षा व्यवस्था को मूल्यों से जोड़ने के लिए पूर्व में दिये गये अध्यायों में समायोचित प्राचीन पद्धति पर्याप्त उपयोगी है। इसी उपयोगिता को दृष्टि में रखते हुए प्रस्तुत अध्ययन के परिप्रेक्ष्य में आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में मुख्यतः नीचे दिये जा रहे बिन्दुओं पर विशेष बल दिया जाना चाहिए।

1. शिक्षा में रचनात्मक एवं सामाजिक समरसता को महत्व।
2. चारित्रिक विकास एवं आत्मोकर्ष पर बल।
3. समता, लोकहित एवं संस्कारों की प्रधानता पर बल।
4. वर्गविहीन समाज संरचना पर बल।
5. राष्ट्रीयता निर्माण (भावनात्मक राष्ट्रीय एकता) पर बल।

2 पाठ्यक्रम में सुधार

1. शिक्षा सभी के लिए अनिवार्य होनी चाहिए।
2. शिक्षा राष्ट्रीय एवं देश प्रेम की भावना लाने हेतु व्यावहारिक रूप से ही दी जानी चाहिए। सर्वधर्म प्राथनाऐं होनी चाहिए एवं पाठ्यक्रम में उक्त भावनाओं से युक्त अध्ययन सामग्री को जैसे सभी धर्मों के अच्छे गुण विकसित करने वाले भावों की कविताऐं आदि को पर्याप्त स्थान दिया जाना चाहिए। ताकि आगे के स्तरों में उसी भावना का व्यापक स्वरूप प्रदान किया जा सके।
3. शिक्षा द्वारा भाषा, साहित्य, सामाजिक विषयों, नैतिक एवं राष्ट्रीय चेतना विकसित की जा सके।

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, Journal UGC CARE Listed (Group-I) Volume 10 ,SP Issu 01 2021

4. विश्वविद्यालय स्तर पर सामाजिक विषयों को प्रभावशाली बनाने हेतु विभिन्न प्रदेशों एवं देशों की भाषाओं, साहित्य, संस्कृति, कला एवं नैतिकता के अध्ययन को विश्वविद्यालय स्तर पर होना चाहिए ताकि उनमें देश के प्रति लगाव, दूसरे के गुणों को ग्रहण करने का दृष्टिकोण व्यापक हो सके।

3 पाठ्येत्तर क्रियाऐं

प्राचीन शिक्षा जिस संस्कृति के रक्षा का नैतिक पाठ व्याख्यायित करती है, आज समाज को उसकी परम आवश्यकता है, जिससे मानव एवं मानवता का सहज उद्धार, जीवन के उन्नयन का श्रेष्ठ पक्ष, गौरवशाली राष्ट्र नियोजन का उचित माध्यम बनेगा। निष्कर्षतः एक समृद्धिशाली एवं सुसंस्कृत भारत का निर्माण होगा, जो भूमण्डलीकरण एवं वैश्वीकरण की वर्तमान प्रगतिवादी प्रतिस्पर्द्धा में भारत वर्ष को शांति के अग्रदूत के रूप में विश्व का अग्रगणी राष्ट्र बनाने में सहायक होगा।

भावी शोध अध्ययनों हेतु सुझाव

प्रस्तुत शोध भावी शोध अध्ययनों हेतु सुझाव निम्नवत् हैं–

1. प्रस्तुत शोध अध्ययन वैदिक एवं पौराणिक शिक्षा को आधार मानकर किया गया है, भावी शोध अध्ययन वैदिक एवं उपनिषदीय शिक्षा प्रणाली पर किये जा सकते हैं।
2. भावी शोधकार्य वेदोत्तर शिक्षा प्रणाली पर भी किये जा सकते हैं।
3. प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्राचीन शिक्षा (वैदिक–पौराणिक शिक्षा प्रणाली) के समग्र रूप पर अध्ययन किया गया है, भावी शोध अध्ययन किसी विशेष शिक्षा शाखा जैसे चिकित्सा शिक्षा, सैन्य शिक्षा, ज्योतिष शिक्षा, वास्तु शिक्षा आदि को भी आधार बनाकर किये जा सकते हैं।
4. भावी शोध अध्ययन वैदिक शिक्षा के आलोक में वर्तमान शिक्षा के नैतिक मूल्यों को आधार बनाकर किया जा सकता है।

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, Journal UGC CARE Listed (Group-I) Volume 10 ,SP Issu 01 2021

5. वैदिक शिक्षा के आलोक में वर्तमान गुरू शिष्य संबंधों में उत्पन्न विकारों तथा समाधान के सन्दर्भ में भावी शोधकार्य किया जा सकता है।
6. भावी शोधकार्य महाभारत कालीन शिक्षा प्रणाली के सन्दर्भ में भी किया जा सकता है।
7. भावी शोधकार्य वैदिक एवं वेदोत्तर शिक्षा प्रणाली के तुलनात्मक अध्ययन के रूप में किया जा सकता है।
8. भावी शोध अध्ययन वैदिक एवं बौद्ध शिक्षा प्रणालियों के तुलनात्मक अध्ययन को विषय बनाकर किया जा सकता है।
9. भावी शोध कार्य वैदिक काल से वर्तमान काल तक स्त्री शिक्षा के सन्दर्भ में भी किये जा सकते हैं।
10. भावी शोध कार्य वैदिक काल से वर्तमान काल तक शिक्षा में अध्यात्म एवं धर्म के प्रभाव के सम्बन्ध में भी किया जा सकता है।
11. भावी शोध अध्ययन शिक्षा में संस्कारों के महत्व पर भी किया जा सकता है।
12. भावी शोध अध्ययन विभिन्न ऐतिहासिक कालखण्डों को शिक्षा प्रणाली पर भी किया जा सकता है।

अध्ययन, शैक्षिक शोधों के इतिहास में न केवल एक अध्याय जोड़ता है, ज्ञान की सीमा को परिवर्धित करता है, अपितु विभिन्न भावी शोधकर्ताओं हेतु उपरोक्त समस्या क्षेत्र में अन्य शोध अध्ययनों के सम्पादन की प्रेरणा भी देता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

पुस्तकें

- अग्निहोत्री (1974) : भारतीय शिक्षा की वर्तमान समस्याएँ, रिसर्च पब्लिकेशन, देहली
- अग्निहोत्री, रविन्द्र (2007) : आधुनिक भारतीय शिक्षा, समस्या एवं समाधान, राज. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, Journal UGC CARE Listed (Group-I) Volume 10 ,SP Issu 01 2021

- अग्रवाल, वीना (2006) : भारतीय परम्परा में शैक्षिक प्रशासन, सम्पादक कमला वशिष्ठ, मैनेजमेंट फोर एकेडमिक एक्सीलैन्स इन स्कूल एजुकेशन, शिक्षा प्रकाशन, जयपुर
- अल्तेकर (1975) : एज्यूकेशन इन एसियण्ट इण्डिया, मनोहर प्रकाशन, वाराणसी.
- कालिदास (1976) : रघुवंशम् पं. रामचन्द्र शुक्ल (टीकाकरण) रामनारायण लाल बेनीमाधव, कटरा रोड़, इलाहाबाद.
- कौटिल्य (1923): अर्थशास्त्र, प्राणनाथ विद्यालंकार, मोतीलाल बनारसीदास, सैदमिठ्ठा बाजार, लाहौर.
- कुलिश, कर्पूरचन्द (वि. सं. 2044) वेद विज्ञान, राजस्थान संस्कृत साहित्य अकादमी, जयपुर
- गोस्वामी, तुलसीदास (संवत 2041) : श्रीरामचरितमानस, हनुमान प्रसाद पोद्दार (टीकाकार), गीता प्रेस गोरखपुर.
- चट्टोपाध्याय, सतीश चन्द्र एवं धीरेन्द्र मोहन दत्त (1994) : भारतीय दर्शन, पुस्तक भण्डार पब्लिशिंग हाउस, पटना
- त्यागी, ओंकार सिंह एवं विजेन्द्र सिंह (2004) : उदीयमान भारतीय समाज और शिक्षा, अरिहंत शिक्षा प्रकाशन, जयपुर
- त्यागी ओंकार सिंह एवं अन्य (2003) : शैक्षिक प्रबन्ध एवं विद्यालय संगठन, अरिहन्त शिक्षा प्रकाशन, जयपुर
- द्विवेदी, कपिल देव (1971) : रचनानुवाद कौमुदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी.
- पचौरी, गिरीश (2003) : उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा, इण्टरनेशनल पब्लिशिंग हाउस, मेरठ
- पाठक, पी. डी. एवं गुरसरनदास त्यागी (2012) : भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएँ, अग्रवाल प्रकाशन आगरा

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, Journal UGC CARE Listed (Group-I) Volume 10 ,SP Issu 01 2021

- पाण्डेय, श्याम लाल (1964) : भारतीय राजशास्त्र के प्रणेता, हिन्दी समिति सूचना विभाग, लखनऊ, उत्तरप्रदेश
- पाण्डेय, के. पी. एवं पाण्डेय अमिता (2012) : शिक्षा में क्रियात्मक अनुसंधान, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा
- पाण्डेय, रामशकल (1993) : मूल्य शिक्षा शिक्षण, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा
- पाण्डेय, रामशकल (2011) : मूल्य शिक्षा के परिप्रेक्ष्य, आर. लाल बुक डिपो, मेरठ
- पाण्डेय, रामशकल (2014) : उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा
- बघेला, हेतसिंह (1999) : आधुनिक भारत में शिक्षा, राजस्थान प्रकाशन, जयपुर
- भट्टाचार्य, श्री रामशंकर (1972) : इतिहास पुराण का अनुशीलन, इण्डोलाजिकल बुक हाउस, वाराणसी
- भटनागर, आर. पी. मीनाक्षी भटनागर (1994) : व्यावहारिक विज्ञानों में अनुसंधान के प्रयोगात्मक आकल्पन, ईगल बुक इन्टरनेशनल, मेरठ.
- भटनागर, आर. पी. एवं अन्य (2015) : शिक्षा अनुसंधान प्रक्रिया प्रकार एवं सांख्यिकी आधार, आर. लाल बुक डिपो, मेरठ
- मसूदा नारायण सिंह (1966) : उपनिषद मनन, महर्षि प्रकाश मन्दिर, जयपुर
- मित्तल, एम. एल. (2003) : उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा, इन्टरनेशनल पब्लिशिंग हाउस, मेरठ.
- मित्तल, सन्तोष (2005) : शैक्षिक तकनीकी एवं कक्षा–कक्ष प्रबन्ध, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर
- मैनी, धर्मपाल एवं अन्य (2005) : विश्व का प्रथम मानवमूल्य–परक शब्दावली का विश्वकोश (खण्ड प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ एंव पंचम) सरूप एण्ड सन्ज, नई दिल्ली.